43

शोध परिधि
SHODH PARIDHI

साहित्य, कला संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

Volume : 1 Issue : 1/2014 ISSN : 2349-9575

मुख्य संरक्षक
श्रीयुत गोपाल दास 'नीरज'

प्रधान सम्पादक
डॉ. जीत सिंह

सम्पादक
डॉ. मंजू चौहान

उपसम्पादक
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. हरिन्द्र कुमार

सहसम्पादक
डॉ. सत्यन्त कुमार
डॉ. कनक कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

शोध परिधि - प्रेरणा साहित्य समिति हापुड़ (रजि.)-245101
एवं 80 'जी' से पंजीकृत (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

Page no. 101 to 107

शोध परिधि ISSN-2349-9575

साहित्य,कला,संस्कृति,मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

Higher Education in India –Structure, Issues and Suggestions

Kishor Kumar[1]
Sudhir kumar[2]

Our university system is, in many parts, in a state of disrepair...In almost half the districts in the country, higher education enrollments are abysmally low, almost two-third of our universities and 90 per cent of our colleges are rated as below average on quality parameters... I am concerned that in many states university appointments, including that of vice-chancellors, have been politicised and have become subject to caste and communal considerations, there are complaints of favouritism and corruption.

– Prime Minister Manmohan Singh in 2007[3]

Introduction

There is a general presumption that higher education is not necessary for economic growth and development. On the other hand, it is literacy and primary education that is argued to be important. Estimates on internal rate of return also contributed to strengthening of such a presumption. Increased national and international concerns for Education for All, also led to overall neglect of higher education in many developing countries. The problem of resource scarcity added further to the problem.

Structure of Higher Education System in India

India has the largest number of higher education institutions in the world. The number of students enrolled is 10.5 million, the third-largest globally after China and USA. As noted by Pawan Agarwal (2006)[4], higher educational institutions in India are of different types, depending on their academic, administrative and financial systems Universities may also recognize institutions as „deemed to be universities? or set up institutes of national importance. The institutions may be funded publicly, be aided by the government, to be funded privately. In additions, it is estimated that well over 100,000 Indian students are enrolled in higher education institutions in countries other than India such as USA, UK, Australia, Singapore, and New Zealand. Many students also venture out to countries where English is not the local language, making use of facilities provided specifically for overseas students. China, Russia, and the Ukraine are some such countries. At the same time, the facilities provided for foreign students in India are appreciable.

Critical Issues in Indian Higher Education

कश्मीर समस्या : समस्या व निवारण

डॉ. दीपक कुमार
पोस्ट डॉक्ट्रेट फैलो
के.एम.जी.जी. पी.जी. कॉलेज
बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

डॉ. किशोर कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
के.एम.जी.जी. पी.जी. कॉलेज
बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

जब भारत–पाक सम्बंध या इन दोनों राष्ट्रों के बीच के विवादों का जिक्र किया जाता है तब अनगिनत पहलू सामने उभर कर आते है। विवादित मुददे चाहें जो भी हो चाहे वह जल बटवारें से सम्बधित हो, सरक्रीक या सियाचिन मुददा हो या सबसे अहम विषय जो दोनों देशों की आजादी के साठ वर्षों के बाद भी टस से मस नहीं हुआ यानि–कश्मीर मुददा हो, यदि बारीकी से इन मुददों की जड़ तक जाया जाए तो समस्या केवल एक ही दिखाई देती है वह है–आपसी तालमेल का ना होना। कहीं न कहीं वह कटुता जो विभाजन का कारण थी, आज भी सभी वर्तमान समस्याओं का कारण बनी हुई है।

इन सभी समस्याओं के बावजूद कश्मीर का मुददा ही केवल वास्तविक मुददा है। जिसके सुलझते ही ये सभी मुददे अपने आप सुलझ जाऐंगें। कश्मीर समस्या के अपने–अपने ढंग से समाधान निकाले जा रहे हैं। परन्तु जनता की समस्याओं पर कभी कोई गौर नहीं करना चाहता। कश्मीर में समस्या यह है कि मात्र 15,853 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र की कश्मीर घाटी को पूरे राज्य जम्मू–कश्मीर तथा लददाख का प्रतिनिधि माना जाता है। अतः कोई भी फार्मूला या समाधान इस समस्या का हल नहीं निकाल पाता।

निसन्देह वर्तमान भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा असामान्य रूप से विभाजित प्रारूप तो कश्मीर समस्या के हल न निकलने का कारण है ही परन्तु वह अतीत अध्याय जिसके कारण भारत–पाक विभाजन हुआ वह भी इस उलझी हुई समस्या का एक महत्वपूर्ण कारक है।

विभाजन के साथ ही दोनों देशों भारत तथा पाकिस्तान के बीच हमेशा रहने वाली घृणा, अविश्वास, सन्देह तथा भय उत्पन्न हो गया। पाकिस्तान के उच्च वर्ग (राजनैतिक, सैनिक तथा असैनिक) की यह विचारधारा बन गयी कि भारत कभी उन्हें शांति से रहने नहीं देगा तथा मौका मिलते ही उन्हें बर्बाद करने का प्रयास करेगा भारतीय उच्च वर्ग की भी यही धारणा थी जिस कारण दोनों ही देशों ने एक–दूसरे से ताकतवर बनने के लिए अपनी सैनिक क्षमताओं को बढाया।

पाकिस्तान की असंतुलित राजनीतिक दशा भी दोनों देशों के बीच तनाव के लिए जिम्मेदार थी तथा है भी, मुस्लिम लीग जो बडे जमींदारों, बुद्धिजीवियों, किसानों, मजदूरों की पार्टी थी स्वतंत्रता के बाद उसने पाकिस्तान को गति प्रदान की, किसी भी राजनीतिक पार्टी या राजनीतिक संगठन ने आजादी (पाकिस्तान) के बाद वह दर्जा या शक्ति प्राप्त नहीं की जो मुस्लिम लीग (1954 तक) के पास थी तथा यही पार्टी पाकिस्तान के राजनैतिक पक्ष को चला रही थी-तथा इसका केन्द्र व राज्यों (प्रांतों) पर लगभग एकाधिकार थी।

लियाकत अली खां जो पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री थे (अगस्त 47 अक्टूबर 1951) उन्होंने कहा कि "मैं सदा स्वयं को लीग का प्रधानमंत्री समझता हूँ। मैं कभी भी अपने आप को संसदीय समिति द्वारा चुना हुआ प्रधानमंत्री नहीं समझता।" जिन्ना की मृत्यु तथा लियाकत अली की हत्या के बाद मुस्लिम लीग जनता को एक मजबूत कार्यक्रम या एक आकर्षक नेता देने में असफल रहीं। अतः उसने प्रांतीय राजनीतिज्ञों तथा मुददों (Local Politicans and local issues) को वरीयता देना प्रारंभ किया। उस वक्त पाकिस्तानी जनता ग्रामीणी परिवेश वाली तथा

Scanned by CamScanner